Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



कक्षा – 9

हिन्दी

क्षितिज (काव्य खंड)

अध्याय –8 : वाख (ललद्यद)

भाग – 3

अभ्यास प्रश्न

कुशाल सोलंकी

Under CSR Support by
ipca | Foundation

अभ्यास प्रश्न

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



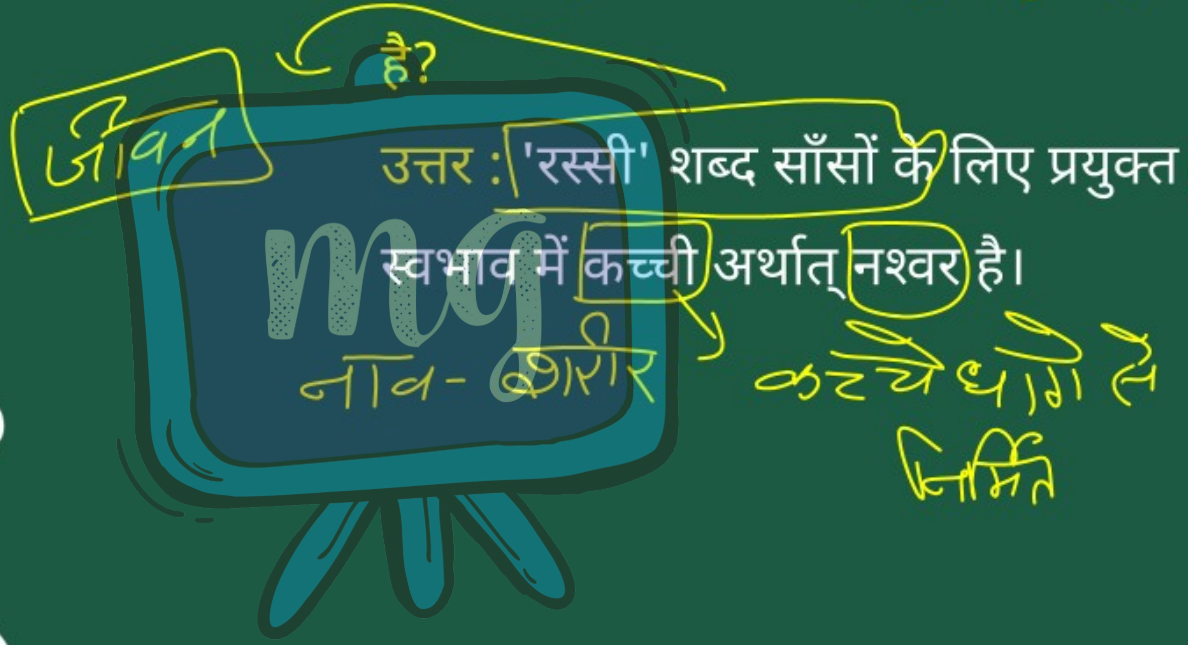
1. 'रस्सी' यहाँ किसके लिए प्रयुक्त हुआ है और वह कैसी है?



अभ्यास प्रश्न

1. 'रस्सी' यहाँ किसके लिए प्रयुक्त हुआ है और वह कैसी है?

उत्तर : 'रस्सी' शब्द साँसों के लिए प्रयुक्त हुआ है। वह स्वभाव में कच्ची अर्थात् नश्वर है।



अभ्यास प्रश्न



2. कवयित्री द्वारा मुक्ति के लिए किए जाने वाले प्रयास व्यर्थ क्यों हो रहे हैं?



अभ्यास प्रश्न



2. कवयित्री द्वारा मुक्ति के लिए किए जाने वाले प्रयास व्यर्थ क्यों हो रहे हैं?

उत्तर : कवयित्री का जीवन बीता जा रहा है। उम्र बढ़ती जा रही है। मृत्यु निकट आ रही है, किंतु प्रभु से मिलन नहीं हो पा रहा। अत: उसे लगता है कि उसकी सारी साधना व्यर्थ हुई जा रही है। साधना का परिणाम नहीं निकल रहा।

अभ्यास प्रश्न



3. कवयित्री का 'घर जाने की चाह' से क्या तात्पर्य है?

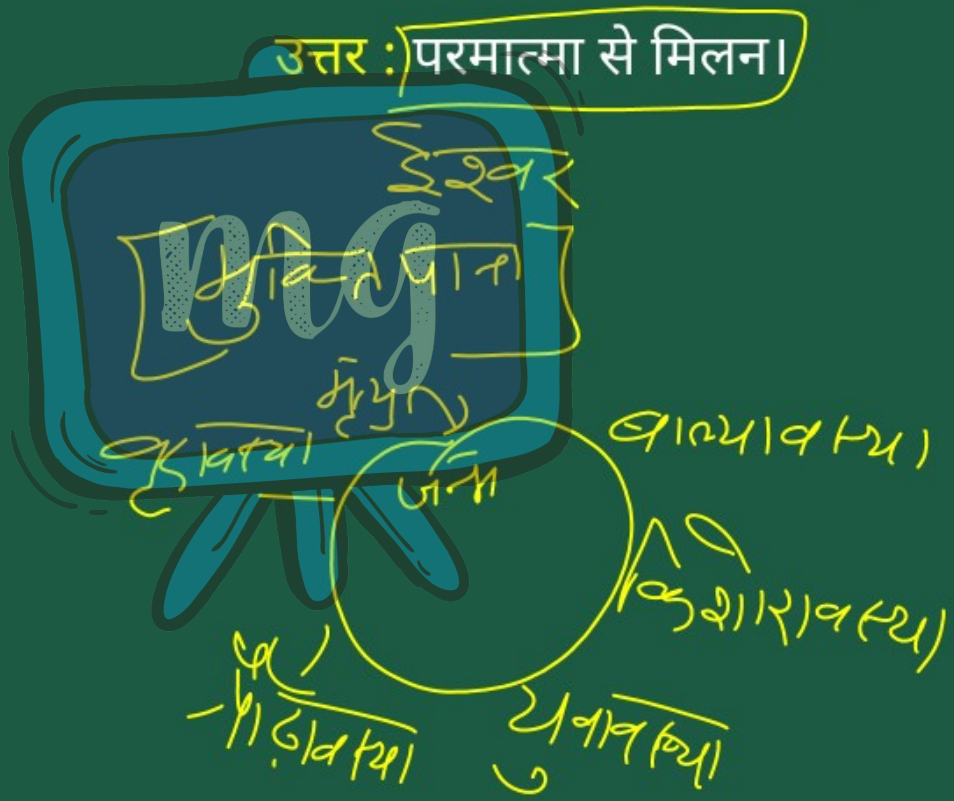


अभ्यास प्रश्न



3. कवयित्री का 'घर जाने की चाह' से क्या तात्पर्य है?

उत्तर : परमात्मा से मिलन।



अभ्यास प्रश्न



4. भाव स्पष्ट कीजिए-

(क) जेब टटोली कौड़ी न पाई।





4. भाव स्पष्ट कीजिए-

(क) जेब टटोली कौड़ी न पाई।

उत्तर : कवयित्री को अनुभव होता है कि वह जीवन-भर हठयोग-साधना करती रही, किंतु कोई सफलता न मिल सकी। उसकी जेब खाली ही रही।

अभ्यास प्रश्न



(ख) खा-खाकर कुछ पाएगा नहीं,
न खाकर बनेगा अहंकारी।





उदाहरण

(ख) खा-खाकर कुछ पाएगा नहीं,
न खाकर बनेगा अहंकारी।

उत्तर : मनुष्य भोग कर-करके अपना शरीर ही नष्ट करता है। उसे कोई उपलब्धि नहीं हो पाती। वह परमात्मा से दूर हो जाता है। भोग करना एक प्रकार का भटकाव है।

भोगों पर लात मारने वाला, अर्थात् त्यागी-तपस्वी-व्रती महात्मा अहंकारी हो जाता है। वह स्वयं को सबसे ऊँचा मानने लगता है। अत: वह भी ईश्वर-भक्ति से भटक जाता है।

अभ्यास प्रश्न



5. बंद द्वार की साँकल खोलने के लिए ललद्यद ने क्या उपाय सुझाया है?



अभ्यास प्रश्न



5. बंद द्वार की साँकल खोलने के लिए ललद्यद ने क्या उपाय सुझाया है?

उत्तर : ललद्यद ने सुझाव दिया है कि भोग और त्याग के बीच संतुलन बनाए रखो। न तो भोगों में लिप्त रहो, न ही शरीर को सुखाओं; बल्कि मध्यम मार्ग अपनाओ। तभी प्रभु-मिलन का द्वार खुलेगा।



6. 'ज्ञानी' से कवयित्री का क्या अभिप्राय है?





6. 'ज्ञानी' से कवयित्री का क्या अभिप्राय है?

उत्तर : 'ज्ञानी' से कवयित्री का अभिप्राय है - जिसने परमात्मा को जाना हो, आत्मा को जाना हो।

